IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

बौद्ध भिक्षु (साधु-सन्यासी) एवं विहार (मठ) की संस्कृति एवं परम्पराऐं

डॉ. करन सिंह
(एम.ए, नेट, जे.आर.एफ. सेट, एवं पी.एच.डी-समाजशास्त्र)
सहा. प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग
शा. छत्रसाल महाविद्यालय पिछोर, जिला शिवपुरी
sengarkaran@yahoo.in

सारांशः-

अध्येता द्वारा प्रत्यक्षतः विभिन्न भिक्षुओं, उपासकों, विहारों, बौद्ध संस्कृति के विद्वानों, जानकारों तथा अप्रत्यक्ष रूप से बौद्ध साहित्य के त्रिपिटक, विनयपिटक, भगवान बुद्ध और उनका धम्म इत्यादि तथाअन्य महत्वपूर्ण साहित्य से प्राप्त जनकारी से **"बौद्ध भिक्षुओं (साधु-सन्यासी) और विहारों (मठो) की संस्कृति एवं परम्पराओं"**को पूर्व व वर्तमान सन्दर्भ में जानने-समझने का प्रयास किया गया। भिक्षु बनने की प्रक्रिया से लेकर विहारों में उनकी जीवनशैली--सदाचरण, करूणाशील, चरित्रवान एवं तप-साधना के इर्द-गिर्द रहती है। धर्म के सिद्धांतो, नियमों के अनुसार उनका आचारण कठिनाई से युक्त रहता है। **चीवर** धारण करने से पूर्व उपसकों कोभिक्षुओं द्वारा आचरण का अनुभवविभिन्नशिवरों, कार्यक्रमों के माध्यम से कराया जाता है दीक्षा लेने के बाद स्थाई रूप से चीवर धारण करने पर भिक्षु अपनी संस्कृति एवं परम्पराओंके अनुसार जीवन जीते है तथा तप-साधना व वैराग्य के माध्यम से निर्वाण (संबोधि) प्राप्ती का मार्ग अपनाते है। भिक्षु अपनीध्यान- साधना व ज्ञानज्योति से उपासकों को मानवकल्याण, समरसता, सम्भाव एवं करूणाशीलता का मार्ग दिखाते है जिससे संसार में शांति-स्थापित रहे। आमजन भी भिक्षुओं की कठिन जीवनशैली, सदाचरण से उपासकों के रूप में शिक्षा व मार्गदर्शन प्राप्त कर अपने जीवन को सुख-समृद्धि के लिये विहारों में तथा शिविरों में सहभागिता करते है। बौद्ध धर्म एवं भिक्षुओं की संस्कृति भी सनातन संस्कृति की तरह साधु-सन्यासियों व संतों के माध्यम से मानवकल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

कंजी शब्दः- भिक्षु,विहार, संस्कृति, विनय पिटक, करुणा, दस शील, अष्टांगिक मार्ग,तप-साधनाबौद्ध धम्म।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

पूर्णशोधालेख

"बौद्ध भिक्षु (साधु-संन्यासी) एवं विहार (मठ) की संस्कृति एवं परम्पराऐं"

दुनिया के किसी भी देश की संकृति में वहां के धर्म प्रेणताओं, आख्यानकर्ताओं व चितंको की महती भूमिका होती है तथा धर्म के इन मनीषियों के कई रूप सम्प्रदाओं के आधार पर हमें देखने को मिलते है। इसी प्रकार भारतीय संस्कृति में इन प्रेणताओं को धर्म-सम्प्रदाय के विभिन्न सिद्धांतों के आधार पर ऋषि, मुनि, साधु, संत-सन्यासी,फकीर और भिक्षु आदि संज्ञाओं से पुकारा जाता है। भारतीय संस्कृति में सामान्यतः सदाचरण, सज्जन, तप-साधना एवं परहित करने वाले तथा समरसता का भाव रखने वालों को साधु-सन्यासी कहा गया है। ये आत्मा और परमात्मा की साधना में रत रहते हैं। भारत में सनातन संस्कृति के शैव, वैष्णव, शाक्त, सिक्ख, जैन और इस्लाम आदि सभी में साधु-सन्यासी-फकीर हैं बौद्ध दर्शन में इन्हें 'भिक्षु'कहा जाता है। त्रिपिटक से लेकर लोक श्रुतियों व साहित्य में बौद्ध भिक्षुओं की संस्कृति व मान्यताऐं एवं परम्पराओं के विवरण है। इन भिक्षुओं तथा बौद्ध धर्म की अद्‌वितीय संस्कृति व परम्पराओं से भारत वैश्विक पटल पर अपनी अलग पहचान रखता है।

बौद्ध भिक्षुओं की विशिष्ट संस्कृति, परम्पराऐं, जीवनशैली, आचरण, पहनावा तथा साधना, आवास व विचरणशीलता इन्हें विशिष्ट बनाती है। इन्हीं विशिष्टताओंको परिकल्पनाओं के माध्यम से बौद्ध, भिक्षुओं की संस्कृति को समझने का प्रयास इस शोधालेख के माध्यम से अध्येता द्‌वारा किया जा रहा है। प्रस्तुत आलेख **"बौध भिक्षु व विहार (मठ) की संस्कृति एवं परम्पराओं"**को प्रत्यक्षतः समझने के लिए बौद्ध भिक्षुओं, विहारों, बौद्ध धर्म के जानकारों तथा प्रमाणिक साहित्य से प्राप्त जानाकारी के लिए प्रमुखतः अध्येता द्‌वारा ग्वालियर-चंबल सम्भाग के बौद्ध मठो, भिक्षुओं, जानकारों के अतिरिक्त कई अन्यत्र स्थान के बौद्ध भिक्षु, उपासकों से प्रत्यक्षतः सम्पर्क किया गया तथा इससे सम्बंधित अन्य जानकारी प्राप्त करने के लिए कुछ अप्रत्यक्षस्त्रोतों का सहारा भी लिया गया है। शोधकर्ता द्‌वारा इस आलेख की महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए सहभागी अवलोकन, व्येक्तिक अध्ययन पद्धति तथा सर्वेक्षण शोध प्रविधि का उपयोग कर वर्णनात्मक व अन्वेषणात्मक शोध प्रारूप का चयन किया गया है जिससे संबंधित विषय पर गहन व प्रमाणिक जानकारी प्राप्त हो सके।

बौद्ध भिक्षुओं की संस्कृति को समझने से पहले बौद्ध धम्म को जानना अतिआवश्यक है। बौद्ध धर्म के प्रवर्तक **महात्मा बुद्ध** मानवतावादी, सुधारवादी तथा सभ्यता, इतिहास एवं पुर्नजागरण के अग्रदूत थे। उनका जन्म लुम्बिनी में 563 ई.पू. में हुआ था। शाक्य प्रजातंत्र के क्षत्रिए राजा

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

शुद्धोधन उनके पिता थे। बुद्ध के बचपन का नाम सिद्धार्थ था। बालक से युवक हुए और मानव जीवन केविभिन्न कष्टों को देखकर वे हमेशा व्याकुल रहते थे। एक दिन भ्रमण के दौरान उन्होंने एक वृद्ध रोगी, मृतक तथा सन्यासी को देखा जिससे उनमें वैराग्य की भावना प्रबल हो उठी तथा घर-परिवार को छोड़कर एकान्तवाश में ध्यान-मग्न होकर साधना करने लगे और उन्हें सम्बोधि प्राप्त हुई तभी से वह बुद्ध कहलाए। उन्होंने जाना कि अज्ञान, वेदना, तृष्णा, उपादान, जन्म, मरण, शुख-दुख का रहस्य क्या है। ज्ञान प्राप्ति के पश्चात बुद्ध ने पहला उपदेश सारनाथ में दिया जिसे **'धर्मचक्रप्रवर्तन'**कहा गया है इसके बाद उनके शिष्यों की संख्या निरंतर बढ़ती गई और बौद्ध धर्म के साधु-सन्यासियों के रूप में **'बौद्ध भिक्षुओं'**का उदय हुआ। आज विश्व के कई देशों में बौद्ध भिक्षु व उनकी संस्कृति अद्वितीय है। **पंचशील, चार आर्य सत्य, त्रिशरण, अष्टांगिक मार्गबौद्ध धर्म के आधारभूत सिद्धांत है**। गौतम बौद्ध की शिक्षा तथा उपदेशों कामूल साहित्य पाली भाषा में है जिसे वर्तमान में कई विद्वानों द्वारा बहुभाषा में अनुवादित किया है। बुद्ध ने धम्म के सम्बंध में भिक्षुओं के लिये बहुत कठोर नियम व शर्तें रखी तथा संघ के दरवाजे महिला-पुरूषों दोनों के लिए खोले। इस शोधालेख के माध्यम से हम बौद्ध विहार व भिक्षुओं की संस्कृति को आज नूतन प्रतृत्तियों के साथ समझने का प्रयास कर रहे हैं।

सनातन संस्कृति के साधु-संतों-सन्यासियों की तरह ही बौद्ध धर्म में बौद्ध भिक्षुओं की मान्यता है। अर्थात् ग्रहस्थ जीवन त्यागकर एकांतवाश में तप-साधना में रत, चरित्रवान, सदाचरण, बुद्ध के धम्म सिद्धांतों का अनुसरण करने वाले मनीषियों को **भिक्षु** कहा जाता है उपसक इन्हे **भन्ते** भी कहते हैं। इनकी जीवनशैली, पहनावा व दिनचर्या बौद्ध संस्कृति के अनुरूप होती है। दिल्ली स्थिति **'धम्म भुमि न्यास'**केभन्ते**करूणाशील राहुल जी** बताते हैं कि बौद्ध भिक्षु को चरित्रवान,ध्यानमग्न,निरपराधी, करूणाशील व लोक कल्याणकारी होना चाहिए। इनके दिन की शुरूआत बुद्ध वन्दना के साथ होती है-

नमो तस्स भगवतोअरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

नमोतस्सभगवतोअरहतोसम्मासम्बुद्धस्स

नमोतस्सभगवतोअरहतोसम्मासम्बुद्धस्स

अर्थात् नमस्कार है उन तथागत अर्हत सम्यक-सम्बुद्ध को ।इसे लगातर तीन बार दोहराते है।

इसी प्रकार बुद्ध विहार शिवपुरी के **भन्ते ज्ञानज्योति** दिन के प्रारम्भ में त्रिशरण का स्मरण करते बताते है-

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

बंद्ध शरणं गच्छामि। (पाली)

मैं बुद्ध की शरण में जाता हूँ। (हिन्दी)

धम्मं शरणं गच्छामि। (पाली)

मैं धम्म की शरण में जाता हूँ। (हिन्दी)

संघं शरणं गच्छामि। (पाली)

मैं संघ की शरण जाता हूँ। (हिन्दी)

दुतियम्पि.....

ततियम्पि.....

अर्थात् भिक्षु इस त्रिशरण का तीन बार उच्चारण करते हैं। सुबह जागरण व नित्य कार्य के पश्चात स्नान करके सर्वप्रथम विहार में इस प्रकार की वन्दना करते हैं कई उपासक भी इनका उच्चारण करते हैं। सामान्यतः भिक्षु विचरणशील होते है वे कुछ माह/वर्ष पश्चात अन्यत्र बुद्ध विहार पर चले जाते हैं। इनके निश्चित वस्त्र होते हैं जिन्हें **'चीवर'**कहा जाता है। तथा पाली भाषा में इनके वस्त्रों को **काषांयवस्त्र** कहते हैं। **'चीवर'**के अन्तर्गत तीन अंग वस्त्र होते हैं जिनको क्रमशः **अंगी, अन्तःवस्त्र** और संगाती होते हैं तीनों को मिलाकर 'चीवर' कहा जाता है। बौद्ध भिक्षु बनने पर ही **'चीवर'**धारण कर सकते है।चीवरसामान्यतःलाल, गहरेलाल, हल्केलालरंगकाहोताहै। भिक्षुओं को रहना, खाना, आना-जाना, धम्म के प्रचार-प्रसार हेतु अन्य आवश्यकताऐं उपासकों द्वारा हीदानमें प्रदाय की जाती है। भिक्षुओं द्वारा विहारों में उपासकों के लिये **धर्म-संस्कृति-शिक्षा-दिक्षा** आदि के लिये समय-2 पर विशेष शिविर व कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिसमें उपासकों को ग्रहस्थ जीवन के साथ धर्म की मूल बातें व सिद्धांतों को पालन करना सिखाया जाता है जिससे उपासकों में सदाचरण, सम्भाव, मद्यनिषेध, निरपराधी तथा मानवीयता व करूणाशीलता आये।

ग्वालियर पंचशील बुद्ध विहार के **भन्ते सदातिस्स थेरो जी** ने बताया कि आज आपाधापी के युग में लोगों में मानवीयता की भावना को बढ़ावा देना जरूरी है जिससे नैतिकता को बढ़ावा मिले यही हमारे माध्यम से बुद्ध विहारों में उपासको कोबताया जाता है। जैसे- पंचशील समादान

पाणातिपाता वेरमणी सिक्खापंद समादियामि। (पाली)

मैं जीव हिंसा से अलिप्त रहने की प्रतिज्ञा करता हूँ। (हिन्दी)

अदिन्नादाना वेरमणी सिक्खापंद समादियामि।

मैं चोरी करने से अलिप्त रहने की प्रतिज्ञा करता हूँ।

कामेसु मिच्छाचारा वेरमणी सिक्खापंद समादियामि।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

मैं कामवासना के व्यभिचार से अलिप्त रहने की प्रतिज्ञा करता हूँ।

मुसावादा वेरमणी सिक्खापंद समादियामि।

मैं झूठ बोलने से अलिप्त रहने की प्रतिज्ञा करता हूँ।

सुरा-मेरय-मज्ज पमादण्डा वेरमणी सिक्खापंद समादियामि।

मैं मद्य और अन्य सभी मादक वस्तुओं के सेवन से अलिप्त रहने की प्रतिज्ञा करता हूँ।

भिक्षुओं द्वारा इस प्रकार की शिक्षा, मार्गदर्शन से मानव समाज को सदाचरण के साथ लोक कल्याण का मार्ग दिखाया जाता है। इसी प्रकार बौद्ध धर्म एवं पाली भाषा के जानकार **डॉ. अशोक निगम जी** कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति को सदाचरण के लिये भिक्षुओं द्वारा उपदेशित दस शीलों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है- **अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रम्हाचर्य, अविलासिता, सुखद विस्तर पर न सोना, असमय भोजन का त्याग, मद्यपान** से दूरी और कंचन कामिनी का त्याग। भिक्षु कहते हैं कि इन दस शीलों के आचरण से सदाचरण का जीवन जी सकते है।

ग्वालियर स्थिति पुष्प बुद्ध विहार के भन्ते जीवक जी कहते हैं कि त्रिशरण,चार आर्य सत्य, दस शील की तरह सभी **भिक्षु व भिक्षुणियां** अष्टांगिक मार्ग का भी पालन करते हैं---**सम्यक दृष्टि, सम्यक संकल्प, सम्यक वाणी, सम्यक कर्मांत, सम्यक आजीविका, सम्यक व्यायाम, सम्यक स्मृति तथा सम्यक समाधि**। इस अष्टांगिक मार्ग पर चलने से अंत में निर्वाण की प्राप्ती के मार्ग खुलते हैं तथा उपासकों को भी इनके पालन की शिक्षा निरंतर भिक्षुओं द्वारा दी जाती है। महत्मा बुद्ध द्वारा संघ में भिक्षुओं से इसी प्रकार के कई महत्वपूर्ण नियमों, सिद्धांतों व कठोर आचरण नियम के पालन की अपेक्षा की थी इनके अतिरिक्त भिक्षुओं के लिये 227 शील के पालन पर भी बल दिया गया है। जिनके अन्तर्गत प्रमुखतः सूरज उगने से पहले जागरण, नित्य कार्य, स्नान, साधना तत्पश्चात वन्दना व महमण्डल सूत्र का आचरण करना और भिक्षु को दिन में एक बार भोजन करना। भिक्षुओं का भोजन पूर्णतः दान व भिक्षा से प्राप्त होता है। भिक्षुओं के पास स्वंय का कुछ भी नहीं होता सभी आवश्यक सामग्री दान की ही उपयोग करते हैं तथा उनके चीवर (वस्त्र) भी, उपासकों या किसी गुरू भिक्षु द्वारा दिये गए दान के ही होते हैं।

शिवपुरी स्थित सतोरिया बुद्ध विहार के भत्ते **नागतिस्स जी** बताते हैं कि बौद्ध भिक्षुओं के आचरण नियम तो बहुत कठोर होते हैं लेकिन वर्तमान में बदलती परिस्थितियों के साथ इनमें कुछ लचीलापन भी देखा जा सकता है। कई बुजुर्ग भिक्षुओं व अस्वस्थता की स्थिति में भोजन, विचरणशीलता, दिनचर्या आदि में बदलाव देख सकते हैं पहले भिक्षु गिरी वन, कन्दराओं में वर्षाकाल बिताते थे फिर आश्रम और आज व्यवस्थित व सुविधापूर्ण बौद्ध विहारों की व्यवस्था

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

उपासकों द्वारा उनके लिये की जाने लगी है। भोजन के नियम व साधना में भी शिथिलता आई है हालांकि आज भी प्रत्येक बौद्ध भिक्षु से चरित्रवान, करूणाशील, विनम्र, ध्यानमग्न व धर्म के सिद्धांतों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है। भिक्षु अपना काम स्वयं ही करते हैं तथा वे चरित्रवान होते हैं और उपासकों को भी चरित्रवान बनने की शिक्षा देते हैं। सामान्यतः भिक्षु अपनी साधना, ध्यान व ज्ञानार्जन में मग्न रहते हैं। वे सादा भोजन ही ग्रहण करते हैं तथा जीव हिंसा न हो इसका विशेष ध्यान रखते हैं। बौद्ध धर्म के उपासक (भिण्ड) **श्री ज्ञानदीप बौद्ध** तथा **लाखन सिंह बौद्ध** कहते है कि हम बौद्ध धर्मावलम्बी अपने सभी अनुष्ठान, शुभकार्य व अन्य ग्रहस्थ जीवन की धार्मिक गतिविधि इन बौद्ध भिक्षुओं के द्वारा ही सम्पन्न कराते हैं जैसे- विवाह, ग्रहप्रवेश, त्योहार व अन्य शुभ कार्य।

दतिया जिला में स्थित बुद्ध विहार के **बौद्ध भिक्षु आनंद जी** ने बताया कि हम शुभ कार्यों में उपासकों के यहां निम्न प्रकार से पूजा वन्दना करते हैं-

बणगन्द गुणों हितम हेतम कुशम शांतिति, पूज्यामि मुनिदश्यं
श्री पाद सर्वरूहे पूजनीय, बुद्धम कुशनेन नेयनं पूजनेन नेतेन लाभानि,
मुखम हुक्म मिलायती यथा, युद्धमेन कामो तथा यति विनांश भवं.

अर्थात्- मैं वर्ण गन्द और सुन्दर गुणों से सम्पन्न इस पुष्प से भगवान बुद्ध के पावन चरणों में पूजन करता हूँ। इस पुन्न से मेरी मुक्ति हो जैसे- पुष्प कुमलाता जाता है वैसे ही समय के साथ शरीर विनिष्ट होता है।

सुगन्धकाय मतन्द गुण सुगन्धना।
सुगन्धनाहम गन्धेन पूज्यामि तथागतम।

अर्थात्- मैं सुगन्धयुक्तम शरीर एवं मुखबाले अनंत सुगन्धीगुणों से पूर्ण तथागत बुद्ध के चरित्र की सुगन्ध की पूजा करता हूँ।

इसी प्रकार बौद्ध उपासकों द्वारा विवाह की रस्म भी भिक्षुओं के माध्यम से पूर्ण कराई जाती है जिसमें भिक्षुओं द्वारा मंच पर वर-वधु को परिवार सहित बिठाकर नव दम्पत्ति से पांच प्रतिज्ञाओं के स्मरण से एक-दूसरे के प्रति विश्वास, सहायोग, सम्मान व परिवारों तथा माता-पिता के प्रति आदर एवं सेवा भाव का संकल्प लिया जाता है। इसी समय वर-वधु को भन्ते द्वारा निम्न प्रकार से आशीर्वाद की कामना की जाती है-

इच्छतम् पंचतम् शिक्षम् खिवमेव समझंतो।
सभ्ये पुरून्तो चितसंकम्पा चन्दतनरखो।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

अर्थात्- तुम्हारी चाही हुई व मंगी गई सभी वस्तुऐं तुम्हें शीघ्र प्राप्त हों तथा तुम्हारे चित के संकल्प पूर्णिमा व चन्द्रमा के समान पूरे हो।

इस प्रकार भिक्षुजन अपनी तप-साधना व ध्यानज्योति तथा बुद्ध के संदेशों को स्वंय तो आचरण में ढालते ही है साथ ही उपासकों को भी अपनी संस्कृति व परम्पराओं से लोककल्याण के मार्ग दिखते हैं।

उपदेश देते एवं मौन साधना में भ्रमण करते भिक्षुगण

भिक्षु बनने की प्रक्रियाः-

बौद्ध धर्म में साधु-सन्यासी बनने की प्रक्रिया कठिन है लेकिन यदि व्यक्ति ग्रहस्थ जीवन व मोह-माया को त्यागकर तथा परिवार की अनुमति लेकर बौद्ध धर्म के सभी सिद्धांतों, नियमों व शील आचरण को धारण कर तप-साधना व ध्यानमग्न की इच्छा रखता है तो उसे विधिवत बौद्ध धर्म के किसी भिक्षु गुरू से दीक्षा लेकर तथा धर्म की प्रतिज्ञाओं का संकल्प लेकर भिक्षु बनने की प्रक्रिया पूर्ण कर सकता है। दीक्षा लेने से पहले उससे एक अच्छे उपासक का भी जीवन आचरण करने की अपेक्षा की जाती है। समय-समय पर बौद्ध विहारों तथा बौद्ध धम्म के दीक्षाकेन्द्रों पर उपासकों के लिये विभिन्न प्रकार के शिविर आयोजित किये जाते हैं जिनमें **सामणेर शिविर** अति महत्वपूर्ण माना जाता है। जिला अशोकनगर स्थित बौद्ध विहार के भिक्षु **धम्मशील थेरो जी** बताते हैं कि उपासकों की शिक्षा-दीक्षा के लिये सामणेर शिविर आयोजित किये जाते हैं जिसमें **सामणेर (उपासक)** और **सामणेरी (उपासिका)** दोनो समिल्लित हो सकते हैं कभी-कभी ये शिविर महिला-पुरूष के लिये अलग-अलग भी आयोजित किये जाते हैं। इन शिविरों में उपासकों को शिविर स्थल पर ही रूकना होता है शिविर में भिक्षुओं के द्वारा धमशीलों का आचरण, निद्रा, जागरण, स्नान, भोजन और विशेषकर साधना व ध्यान पर अधिक समय दिया जाता है। शिविर में आयोजकों द्वारा ही इनके

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

रहने, खाने व चीवर की व्यवस्था की जाती है। शिविर की अनिधि कुछ दिन, सप्ताह या महीने की होती है। सम्पूर्ण शिविर अवधी में उपासकों द्वारा चीवर (वस्त्र) धारण किये जाते हैं कभी-कभी उपासक सफेद कपड़े पहनकर भीशामिल होतेंऔर भिक्षुओं द्वारा इन्हें सभी वातावरण (ठण्डी, गरमी) में तप, साधना व ध्यान करने का प्रशिक्षण दिया जाता हैशिविर समाप्ति पर चीवर को आयोजक भिक्षुओं के पास वापस कर दिया जाता है जो उपासक बौद्ध भिक्षु बनना चाहता वह स्थायी रूप से चीवर धारण कर सकता है।

सामणेर जैसे शिविरों व अन्य इसी प्रकार के शिविरों के माध्यम से धम्म के अनुसार जीवन जीने का अनुभव उपासकों को कराया जाता है जिससे उनमें त्याग, समर्पण व साधना की प्रवृत्ति बढ़े। इसी दिशा में जिस किसी को भी बौद्ध भिक्षु बनना होता है तो वे अपने परिवार की अनुमति से किसी भी उम्र में भिक्षु बन सकते हैं तथा हमेशा के लिये किसी बौद्ध भिक्षु से दीक्षा लेकर चीवर (वस्त्र) धारण कर सकते हैं। सामणेर से पहले प्रतिज्ञा के माध्यम से धर्म के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं फिर सामणेर में भाग लेते हैं तत्पश्चात **उपसम्पदा** की प्रक्रिया के बाद व्यक्तिस्थायी रूप से चीवर धारण करके बौद्ध भिक्षु बन जाते भिक्षु बन जाता है लेकिन उसके लिए 10 वर्षकाल विहार में बिताना आवश्यक होता था जो वर्तमान समय में इस अवधि में शिथिलता देखने को मिलती है क्योंकि भन्ते संघतिस्स स्वयं शिविरों में दीक्षा लेने के बाद भिक्षु बने और घर-परिवार हमेशा के लिये त्याग दिया। भिक्षुओं का जीवन भी सनातन संस्कृति के अनुरूप साधु-सन्यासियों की तरह विचरणशील होता है इनका कोई एक निश्चित स्थान नहीं होता चूंकि प्रारम्भ में बौद्ध भिक्षु हमेशा जंगल, गिरी, कन्दराओं और अन्यत्र स्थानों पर भ्रमण पर रहते थे तथा वर्षाकाल में आश्रमों, कुटियों में रूकते थे जिन्हें बौद्ध विहार कहा जाने लगा। भिक्षुओं के पास जो भी कुछ होता है वह सब दान का होता है तथा इनके लिये विहारों की व्यवस्था भी उपासकों द्वारा ही की जाती हैभिक्षु के शांत (मृत्यु) होने को निर्वाण कहा जाता है जिसमें उसका अंतिम संस्कार भिक्षुओं तथा उपासकों द्वारा ही किया जाता है तथा उसकी अस्थियों को स्तूप में सुरक्षित रखा जाता है और उसी स्तूप में उपासकों द्वारा उनका स्मरण किया जाता है जैसे- साँची बौद्ध स्तूप।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

अंतिम संस्कार के उपरांत भंते थेरो की याद में नवनिर्मित स्तूप कदवाया, अशोकनगर

विहार (मठ):-

सामान्यतः जहां बौद्ध भिक्षु निवास करते हैं उसे **'विहार'**कहते है वर्तमान में इन्हें मठ भी कहा जाता है कुछ विद्वान इन्हें भिक्षुओं को समय बिताने, ठहरने का स्थान बताते हैं वहीं कुछ विद्वान इन्हें बौद्धों का मंदिर भी कहते है। प्रारम्भ में बौद्ध भिक्षुओं के दो निवास स्थल थे- **'आवास'**और **'आराम'**। आवास का निर्माण, प्रबंध व देखरेख भिक्षु करते थे तथा आराम की व्यवस्था धनी उपासक द्वारा नगर के न ज्यादा दूर और न ज्यादा नजदीक करते थे। प्रारम्भ में **'आराम'**की सीमा के अन्तर्गत जो 'झोपड़िया' बनाई जाती थी उन्हीं को **'विहार'**कहा जाता था।

घुल्लवग्ग के **'सेनासनक्खन्धक'**से ज्ञात होता है कि गोतम बुद्ध ने शिष्यों के निवेदन पर भिक्षुओं के ठहरने व विश्राम के लिए पाँच प्रकार के स्थलों की अनुमती दी- प्रासाद, विहार, अड्ठयोग, हम्मिय तथा गुहा आदि। विहार पूर्णरूपेण भिक्षु आवास थे बौद्ध ग्रंथ **'विनय पिटक के चुल्लवग्ग'**से ज्ञात होता है कि राजग्रह के एक सेठ ने भगवान बुद्ध से भिक्षुओं के निवास के लिए विहार बनवाने की अनुमति प्राप्त की और सेठ द्वारा साठ (60) विहारों का निर्माण कराया गया। कालान्तर में श्रावस्ती और कौशाम्बी के उपासकों ने 'आरामों' और उसमें विहारों का निर्माण कराया। ये आराम दो प्रकार के होते थे- **फलाराम** (फलवाले) और **पुष्पाराम** (पुष्पवाले)।

ग्वालियर स्थित पुष्प बुद्ध विहार के निर्माणमें सहयोग कराने वाले उपासक श्री लाखन बौद्ध तथा वहां के भन्ते बताते हैं कि विहार-निर्माण के लिये भुखण्ड गांव/नगर के न ज्यादा दूर हो, न ज्यादा नजदीक, वातावरण स्वच्छ व पेड़-पौधों से हरा-भरा हो तथा उपासकों की पहुँच आसानी से हो जहां जिज्ञासु लोग आसानी से पहुँच सके। जहां दिन में भीड़ व रात्रि में शोरगुल न हो, एकान्त और ध्यान योग्य हो। यह सब भिक्षुओं की साधना की दृष्टि से आवश्यक भी था। पहले भिक्षुओं

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

ओर भिक्षुणिओं के लिये अलग-अलग विहार होते थे जिन्हें क्रमशः- भिक्षु, विहार तथा भिक्षुणी विहार कहा जाता था। विहार निर्माण सामग्री में 'ईंट' (इट्ठका), खपरैल (गिंजक), पत्थर (सिला), लकड़ी (दारू), चूना मिट्टी (सुद्या मन्तिका) तथा चिकनी मिट्टी (कुण्डक मन्तिका) का उल्लेख **'विनय पिटक'**में मिलता है। दीवारों की मजबूती तथा सुन्दरता के लिये **'पलस्तर'** (लेप) कुण्डक मन्तिका में भूसी मिलाकर किया जाता था। महान पण्डित राहुल सांस्कृतायन के अनुसार बछड़े के गोबर और राख को मिलाकर तैयार लैप को हाथो से लगाया जाता था जिसे- हत्थभिस्तिकम्म कहते थे। विहारों के निर्माण मैं **'आपक'** (कच्चा), **'धापक'** (पक्का) दोनो प्रकारकेशब्द का प्रयोग किया जाता थातथादोनो प्रकार की ईंटो का उल्लेख मिलता है। विहार निर्माण तथा मरम्मत के लिये 'नवकम्म' शब्द का प्रयोग किया जाता था इस कार्य के लिये नियुक्त कुशलऔर दक्ष भिक्षु को **'नवकम्मिक'**भिक्षु कहा जाता था जो विहारों के अधिक्षण अभियंता के समान होता था।

निर्माणाधीन बुद्ध विहार बामोरकला शिवपुरी

विहार के प्रमुख अंगः-

परिवेणः-परिवेण, परिवह (परिवेणं समज्सति) धातु से बना है जिसका अर्थ है **'धारण'**करना त्रि**पिटिकाचार्य राहुल सांस्कृतायन** तथा **प्रो.सी.एस उपासक** के अनुसार यह विहार का **'आंगन'**था इसमें कीचड़ न हो इसलिए मैरम बिछाई जाती थी तथा इसे समतल करने के बाद इसमें पत्थर के टुकडे बिछाय जाते थे। पानी के निकास के लिये **'नाली'** (उद्कनिद्यमन) बनाई जाती थी।

कोट्ठकः- बौद्ध साहित्य में **'कोट्ठक'**शब्द कई अर्थों में प्रयुक्त हुआ हैः यथा- कोठरी, कोठा, परकोठा,फण्डार कक्ष, फाटक आदि। त्रिपिटक के अनुसार कोठरी के लिये पालि साहित्य में प्रायः **'गब्भ'**शब्द को प्रयोग हुआ है। कोट्ठक शब्द ज्यादातर कोठरी के लिये प्रयुक्त होता है। जिसका सम्बंध वस्तु-सामग्री रखने के लिये निश्चित स्थान होता है जो भण्डारकक्ष माना जाता है। भिक्षु

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

लोग विहार में इस 'कोट्ठक' अर्थात् कोठरी में ही दान से प्राप्त होने वाली सामग्री को रखते थे। यह भिक्षुओं का भण्डारग्रह माना जाता था। वर्तमान में बड़े बौद्ध विहारों में भी एक कक्ष वस्तु-सामग्री के लिए सुरक्षित रखने के लिये आरक्षित किया जाता है जो **'कोट्ठक'**की ही भुमिका निभाता है।

अपट्ठानसालाः- विहारों में भिक्षुओं के लिये एक भोजनशाला होती है जिसे पालि साहित्य में **'अपट्ठानसाला'**कहा गया है। **'चुल्लबग्ग'**में वर्णित है कि गर्मी और सर्दी में भिक्षुगण खुले आकाश के नीचे भोजन करते थे इस कठिनाई को देखते हुये भगवान बुद्ध ने भोजनशाला (अपट्ठानसाला) विहारों में बनाने की अनमति दी। यह ईंट, पत्थर और काष्ठ से निर्मित होती थी इसमें सीड़ियों के साथ-साथ पकड़ने के लिये बाही भी बनाते थे इसे तृण से अच्छादित किया जाता था तथा श्वेत, श्याम एवं गेरूवे रंग से रंगा जाता था चीवर (वस्त्र)आदि टांगने के लिए बांस की लकड़ी पर रस्सी बांधी जाती थी जिसे **'अर्गनी'**कहा जाता था। बड़े विहारों में कुछ भिक्षु मिलकर भोजन बनाते थे और सभी एकसाथ बैठकर खाते थे।

अग्निशालाः- अग्निशाला विहार का एक प्रमुख अंग होता था। चुल्लबग्ग से पता चलता है कि प्रारम्भ में भिक्षु सर्दियों में यत्र-तत्र आग खपरे में रखते थे जिससे विहार गन्दा होता था इसलिये बुद्ध की अनुमति से विहारों में एक निश्चित स्थान पर अग्निशाला होती थी जिसका उपयोग भिक्षु सर्दियों में तापने, वस्त्र सुखने, उजाले के लिये, पानी गर्म करने आदि में करते थे। इसका निर्माण विहार के एक कोने में ईंट, पत्थर आदि से चूलानुमा बनाकर ऊपर धुआँ निकालने के लिये दो-चार ईंटे लगाई जाती थी। **भन्ते आनंद** कहते हैं कि वर्तमान में आधुनिक सुविधाओं, उपकरणों के चलते अग्निशाला के स्थान पर गैस चुल्हे, हीटर, स्टॉव आदि की व्यवस्था उपासकों द्वारा की जाती है।

बच्चकुटीः-यहां पाखानाघार या बिष्टाघर था इसका निर्माण विहार में एक ओर किया जाता था इसमें भूमि के अन्दर बिष्टा (गन्दमल) का एक गड्ढा बनाया जाता था जो ईंट, पत्थर या काष्ठ का होता था पैर रखने के लिये पावदान बनाऐ जाते हैं उसी में एक ओर पेशाब के लिये पेशाबपात्र बनाए जाते थे। चीवर आदि टांगने के लिये बच्चकुटी में भी बांस की लकड़ी पर रस्सी से अर्गनी बनाई जाती थी। नाली साफ करने के लिए खजूर या ताड़ के डठंल का उपयोग करते थे। बच्चकुटी बन्द करने के लिये लकड़ी के किबाड़ का उपयोग होता था। वर्तमान में हम इन बच्चकुटी को विहारों में शौचालय के रूप में देख सकते हैं।

चंकम एवं चंक्रमनशालाः-चंकम बौद्ध स्थापत्य की विशिष्ट देने है। विहारों में भिक्षुओं के टहलने के स्थान को चंकम कहा गया है। **प्रो.सी.एस. उपासक** इसे भिक्षुओं के टहलने का चबुतरा

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

मानते हैं। वास्तव में चंकम एवं चंक्रमनशाला विहार में भिक्षुओं के टहलने के लिये बनाया गया ऊँचा-लम्बा चबुतरा ही होता था जहां वे प्रातः और सायें आवश्यकतानुसार टहलने के साथ चिन्तन भी करते थे। यह विहार का महत्वपूर्ण अंग था। वर्तमान में विहारों में चबूतरा तो नही लेकिन हरा-भरा परिसर तथा बगीचा आदि में भ्रमण करते भिक्षुओं को देखा जा सकता है।

उद्पानशालाः-उद्पान का अर्थ कुआँ और उद्पानशाला का तात्पर्य ऊपर से छायादार व अच्छादनयुक्त कुआँ होता था। पानी जीवन के लिये उतना ही आवश्यक है जितना कि भोजन, इसलिए विहार में कुआँ की व्यवस्था की गई थी कुऐं के चारों ओर चबूतरायुक्त सोपान थे जिस पर चड़कर भिक्षुगण बल्ली की सहायता से पानी भरते थे कालान्तर में कुऐं पक्के होने लगे तथा रस्सी के सहयोग से पानी भरने लगे तथा रेहट का भी प्रचलन हुआ। मिट्टी के बर्तनों के जल्दी फूटने से लोहे, लकड़ी और चमड़े के पात्रों का प्रयोग किया गया। वर्तमान में विहारों में कुआँ के स्थान पर नल, हैण्डपम्प, बोरिंग, टंकी आदि से जल की व्यस्था होने लगी।

जान्ताघर व पुष्करणीः-राहुल सांस्कृतायन के अनुसार विहारों में स्नान के लिये स्नानघर होते थे जिन्हें जन्ताघर कहा जाता था तथा हाथ-पैर धोने, स्नान करने, फूल-पौधों-वृक्षों को पानी देने के लिये पुष्करणी की आवश्यकता होती थी। पुष्करणी का अर्थ **'तालाब'** से है जो छोटे आकार के होते थे। इसमें वर्षा का पानी जमा होता था जिसका उपयोग भिक्षु विहार में करते थे। पुष्करणी में नए जल भरने तथा गन्दा-पुराना जल निकालने की भी व्यवस्था थी।

प्राकारः-विहारों की पशुओं से सुरक्षा के लिये सुरक्षा दिवार का निर्माण किया जाता था जिसे प्राकार कहते हैं। विनयपिटक से ज्ञात होता है कि विहार में जानवरों से सुरक्षा के लिए बांस की लकड़ी, काँटे की बाड़ तथा खाई से तत्पश्चात ईंटो, पत्थरों व लोहे के तार का भी उपयोग प्राकार (सुरक्षा दीवार) बनाने किया जाने लगा। इस प्रकार विहारों की बनावट, संरचना, निर्माण, उसके अंग तथा उपयोग की जाने वाली सामग्री एवं भिक्षुओं के विश्राम व साधना स्थली के रूप मे बौद्ध संस्कृति में विहारों का अद्वितीय स्थान है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

विहार में भिक्षु एवं उपासक

बौद्ध भिक्षुओं (साधु-सन्यासी) एवं बौद्ध, विहारों (मठ) की सस्ंकृति एवं परम्पराओं पर आधारित शोधलेख के विवरण से ज्ञात होता है कि सनातन संस्कृति के साधु सन्यासियों की संस्कृति के समान बौद्ध धर्म में भी भिक्षुओं की संस्कृति भी तप, साधना, वैराग्य और परम सत्य के प्रति समर्पित एवं कठोर जीवन आचरण पर आधारित रहती है, उनका रहन-सहन, खान-पान, पहनावा (चीवर), प्रवास, भ्रमण एवं दिनचर्या विशिष्ट संस्कृति को लिये होती है। चीवर धारण करने के पश्चात भिक्षु की समस्त आवश्यकताऐं उपासकों द्वारा दिये दान से होती है। तप-साधना में रत इनका जीवन लोक कल्याण व मानवीयता को समर्पित होता है। अध्येता द्वारा विभिन्न भिक्षुओं, उपासकों, विद्वानों व बौद्ध धर्म के जानकारों तथा विहारों के भ्रमण से प्राप्त जानकारी के अनुसारबौद्ध भिक्षुओं को अपने धर्म अर्थात बुद्ध द्वारा दिये चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, दस शील साहित 227 शील को आचरण में उतारना होता है तथा उपासकों को भी सदाचरण का मार्गअपने ज्ञान के मार्गदर्शन से दिखाते हैं और अच्छे चरित्र निर्माण की ओर इशारा करते हैं। विहारों में भिक्षुओं के विश्राम स्थल होते हैं जिनकी व्यवस्था उपासकों द्वारा की जाती है। विनय पिटक में वर्णित भिक्षुओं के आचरण नियमों का इनके द्वारा पालन किया जाता है तथा इन नियमों में वर्तमान में कई शिथिलताऐं भी देखने को मिलती है। कुल मिलकर भिक्षुओं की संस्कृति एवं परम्पराऐं उनकी तप-साधना से निश्रृत होती है उनका जीवन आचरण ही मानव कल्याण को सही दिशा देता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, March 2024

सन्दर्भः-

1. भन्ते करूणाशील राहुल : धम्मभूमि दिल्ली
2. भन्ते सदातिस्स थेरो : पंचशील बुद्ध विहार ग्वालियर म.प्र.
3. डॉ. अशोक निगम : बौद्ध धर्म एवं पाली भाषा के जानकार भिण्ड
4. भन्ते जीवक : पुष्प बुद्ध विहार ग्वालियर
5. भन्ते नागतिस्स : सतेरिया बुद्ध विहार शिवपुरी म.प्र.
6. भिक्खु आनंद : सिद्धार्थ बुद्ध विहार दतिया म.प्र.
7. डॉ. जवाहर टैगोर : सामणेर (उपासक) बौद्ध धर्म, अशोकनगर
8. भिक्खु धम्मशील थेरो : बुद्ध विहार, अशोकनगर
9. भन्ते ज्ञान ज्योति : बुद्ध विहार बामौर कला, शिवपुरी म.प्र.
10. भन्ते संघतिस्स : बुद्ध विहार डबरा जिला ग्वालियर
11. श्री कमलेश अहिरवार : शोधार्थी साँची अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध वि.वि. साँची
12. पुष्प सहिबा : सामणेरी (उपासिका) बुद्ध विहार थाटीपुर, ग्वालियर
13. ज्ञानदीप बौद्ध : उपासक, चीनौर ग्वालियर म.प्र.
14. मापंडित राहुल सांस्कृतापनः : श्रिपिटक, विनय पिटक
15. भन्ते भीम रत्न : बुद्ध विहा करेरा शिवपुरी
16. भन्ते चन्दीमा : बुद्धा लर्निंग सेन्टर बौद्धगया बिहार
17. डॉ. अम्बेडकर : भगवान बुद्ध और उनका धम्म